किस् मानित विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर
हिंदी विभाग और सी. एस. आई. आर के
संयुक्त तत्वावधान में 10 जनवरी, 2026 को आयोजित

एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की वर्तमान स्थिति :
चुनौतियाँ एवं सँभावनाएं

(The Current status of Hindi in the Global Context : Challenges & Opportunities)

विश्वविद्यालय के संदर्भ में :

कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज (KISS) की स्थापना एक जाने-माने शिक्षाविद और समाजसेवी, प्रो. अच्युत सामंत ने साल 1992-93 में की थी। इसका उद्देश्य यह रहा है कि पिछड़े आदिवासी बच्चों को पहली कक्षा से स्नातकोत्तर तक अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा दी जाए और साथ ही एक आवासीय रूप में डॉक्टरेट लेवल की रिसर्च बिल्कुल फ्री में कराई जाए। कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज को अगस्त, 2017 में UGC एक्ट 1956 के सेक्शन 3 के तहत मिनिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट (MHRD), जो अब मिनिस्ट्री ऑफ़ एजुकेशन (MoE) है, ने डी नोभो कैटेगरी के तहत डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया है। बाद के अधिसूचना में विश्वविद्यालय को एक मानित विश्वविद्यालय के रूप मे कार्य करने के लिए विस्तार दिया गया। इसे 2024 में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) से 'A' ग्रेड के साथ अपने पहले चक्र में पांच साल के लिए मान्यता दी गई है। यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समग्र विकास के लिए व्यापक समर्थन के माध्यम से स्वदेशी समुदायों के सशक्तिकरण, शिक्षा और उत्थान के लिए समर्पित एक अग्रणी संस्थान के रूप में उभरा है। यह समवेसी विकास को बढ़ावा देने, स्थिरता, सामुदायिक सहभागिता और सांस्कृतिक संरक्षण पर जोर देने में विश्वास करता है। विश्वविद्यालय का अकादमिक गतिशील परिवेश विद्यार्थियों को समकालीन मुद्दों में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करता है। विश्वविद्यालय ने आदिवासी अर्थ व्यवस्था और संसाधन, प्रवंधन, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों, विरासत, संस्कृति, आदिवासी विचार, साहित्य और भाषाओं के क्षेत्रों में अनुसंधान को गति प्रदान करने के लिए सात संकाय शुरू किए। इन्हीं तत्वावधानों से यह संस्थान ओड़िशा और उसके पड़ोसी राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा महिला सशक्तिकरण, आदिवासी उत्थान और सतत विकास में अवक्षय सामाजिक परिवर्तन लाने में सक्षम रहा है।

प्रो० अच्युत सामंत
सत्प्रेरक एवं मार्गदर्शक,
किस् मानित विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर

प्रो० शरणजीत सिंह
कुलपति
किस् मानित विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर

तुलनात्मक जनजातीय भाषा और साहित्यिक संकाय (School of Comparative Tribal Languages And Literatures) :

किस् मानित विश्वविद्यालय के तहत चल रहे सात संकायों में से तुलनात्मक जनजातीय भाषा और साहित्यिक संकाय ने प्रारंभ से ही अपनी प्रासंगिकता, महत्व और नयापन साबित किया है। यह संकाय हिंदी, अंग्रेजी, ओड़िआ, संस्कृत और संथाली जैसे विषयों में स्नातक और स्नातकोत्तर के अलावा आदिवासी भाषाओं और साहित्य में तुलनात्मक दृष्टिकोण से विशेष अध्ययन भी करवाता है। साहित्यिक ज्ञान के नए क्षेत्रों में यह संकाय पीएच०डी० भी करवाता है, जो विशेष तौर पर आदिवासी समाज, संस्कृति और उसके सौंदर्यशास्त्र से संबंधित अंतरानुशासनिक कार्य होता है।

सी. एस. आई. आर. - आई. एम. एम. टी. के संदर्भ में :

सी. एस. आई. आर. – आई. एम. एम. टी. (खनिज एवं सामग्री प्रौद्योगिकी संस्थान), भुवनेश्वर, की स्थापना वर्ष 1964 में **रीजनल रिसर्च लेबोरेटरी (Regional Research Laboratory)** के रूप में की गई थी। यह **CSIR की एक प्रमुख प्रयोगशाला** है, जो भारत के खनिज, सामग्री और धातु उद्योगों के लिए **सतत अनुसंधान एवं विकास (Sustainable R&D)** पर केंद्रित है।

यह संस्थान **संसाधन दक्षता**, **अपशिष्ट मूल्यवर्धन** (जैसे; *टेराफिल* जल फ़िल्टर), **उन्नत सामग्री**, **स्वच्छ ऊर्जा** जैसी तकनीकों का विकास करता है तथा **खनिज संवर्धन, धातुकर्म, पर्यावरणीय प्रौद्योगिकी और सामग्री प्रसंस्करण** के क्षेत्रों में नवाचारों के माध्यम से **MSME उद्योगों** को सहयोग प्रदान करता है।

संगोष्ठी के आयोजन की परिकल्पना एवं उद्देश्य :

संगोष्ठी का शीर्षक : ***वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की वर्तमान स्थिति : चुनौतियाँ और संभावनाएँ***

यह राष्ट्रीय संगोष्ठी वैश्विक संदर्भ में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति, उसकी बढ़ती संभावनाओं और उभरती चुनौतियों पर अकादमिक स्तर पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत करने हेतु आयोजित किया जा रहा है। विश्वभर में हिंदी भाषियों की संख्या, प्रवासी जगत का विस्तार, अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में हिंदी-अध्ययन में बढ़ती रूचि, डिजिटल मीडिया और तकनीक में हिंदी की उपस्थिति - इन सभी कारकों ने हिंदी को एक उभरती हुई विश्वभाषा की दर्जा प्रदान किया है। इसके बावजूद भाषा-प्रौद्योगिकी संसाधनों का विकास, अनुवाद-सुविधाओं की कमी, वैश्विक ज्ञान-उत्पादन में हिंदी की सीमित भागीदारी और विविधता-समृद्ध हिंदी समुदायों के लिए एकीकृत मंच की आवश्यकता जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं।
संगोष्ठी का उद्देश्य इन मुद्दों पर शोधार्थियों, शिक्षकों, भाषाविदों, साहित्यकारों, पत्रकारों, तकनीकी विशेषज्ञों, नीति-निर्माताओं और विश्व भर के हिंदी-प्रेमियों को एक साथ मंच उपलब्ध कराना है ताकि वे वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर सकें और भविष्य की दिशा निर्धारित कर सकें। यह सम्मेलन हिंदी के अकादमिक, सांस्कृतिक, प्रौद्योगिकीय और अंतरराष्ट्रीय आयामों को एकीकृत रूप में देखने का अवसर प्रदान करेगा।

प्रस्तावित उप-विषय :

प्रतिभागी इन उप-विषयों के अतिरिक्त किसी अन्य प्रासंगिक विषय पर भी शोध-पत्र भेज सकते हैं।

1. वैश्विक भाषा-परिदृश्य में हिंदी का विस्तार (The Expansion of Hindi in the Global Linguistic Landscape)
2. भारतीय प्रवासी समुदाय और हिंदी का सांस्कृतिक सेतु (The Indian Diaspora and Hindi as a Cultural Bridge)
3. भाषा-प्रौद्योगिकी में हिंदी : अवसर और बाधाएँ (Hindi in Language Technology: Opportunities and Challenges)
4. हिंदी अनुवाद : वैश्विक संवाद, चुनौतियाँ और नयी दिशा (Hindi Translation: Global Communication, Challenges, and New Directions)
5. डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और हिंदी की भूमिका (Digital Media, Social Media, and the Role of Hindi)
6. वैश्वीकरण, बाज़ार और हिंदी का आर्थिक आयाम (Globalization, the Market, and the Economic Dimensions of Hindi)
7. बहुभाषिक विश्व में हिंदी की स्थिति और नीतिगत चुनौतियाँ (The Status of Hindi in a Multilingual World and Policy Challenges)
8. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार में हिंदी का योगदान (The Contribution of Hindi to the Global Dissemination of Indian Culture)
9. हिंदी और विश्व भाषाओं के बीच अंत:सांस्कृतिक संवाद (Intercultural Dialogue between Hindi and World Languages)
10. कृत्रिम बुद्धिमता (AI) और हिंदी (Hindi and Artificial Intelligence (AI))
11. हिंदी डिजिटल सामग्री निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमता (AI) का योगदान (The Contribution of Artificial Intelligence (AI) to Hindi Digital Content Creation)

शोध पत्र संबंधी निर्देश :

- शोधार्थियों, शिक्षकों और विषय-विशेषज्ञों से निवेदन है कि वे सम्मेलन की विषय और उप-विषय से संबंधित मौलिक, अप्रकाशित शोध-पत्र प्रस्तुत करें।
- शोध पत्र हिंदी में स्वीकार किए जाएंगे। शोध सारांश 300 शब्द तक एवं शोध पत्र की शब्द सीमा 2500 से 3000 तक होनी चाहिए।
- शोध पत्र युनिकोड/ मंगल/ कोकिला फॉन्ट में ही भेजें। शोध पत्र के प्रथम पृष्ठ में शोध शीर्षक, लेखक/सह लेखक का नाम तथा पद नाम, संपर्क का पता, दूरभाष संख्या और ईमेल का उल्लेख करें। शोध पत्र का संदर्भ APA / MLA शैली को ही प्राधान्य दें।
- प्रतिभागी संगोष्ठी में शोध प्रपत्र वाचन हेतु तथा शोध सार एवं संपूर्ण शोध प्रपत्र भेज सकते हैं।
- चयनित शोध पत्रों की एक संपादित पुस्तक ISBN संख्या के साथ प्रकाशित की जाएगी।
- शोध पत्र वर्ड फाइल और पीडीएफ फाइल दोनों फॉर्मैट में ईमेल पता vishwahindidiwaskiss@ gmail.com पर भेजें।
- शोध सार भेजने की अंतिम तिथि 07 जनवरी 2026 तथा संपूर्ण आलेख भेजने की अंतिम तिथि 09 जनवरी 2026।

पंजीकरण :

ऑनलाइन गूगल फॉर्म के माध्यम से पंजीकरण किया जाएगा। पेमेंट के पश्चात रसीद की कॉपी गूगल फॉर्म के साथ संलग्न करना होगा।

पंजीकरण हेतु लिंक : https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfYS-AONf5lz8IbVT7gYEYWSbf43QfNkE8AZsYw2WCtJy-Fwg/viewform?usp=publish-editor

संगोष्ठी के लिए पंजीयन शुल्क :

- विद्यार्थियों के लिए : 200/-
- शोधार्थी के लिए : 800/-
- प्राध्यापक के लिए : 1200/-

बैंक खाते का विवरण :

बैंक का नाम	:	PUNJAB NATIONAL BANK
बैंक का पता	:	INSIDE KISS CAMPUS, CS.PUR, ODISHA, BHUBANESWAR-7510224
खाताधारक का नाम	:	KISS DEEMED TO BE UNIVERSITY
खाता का प्रकार	:	SAVING FUND GENERAL
खाता संख्या	:	7229000100013999
IFSC CODE	:	PUNB0722900
MICR CODE	:	751024015

संगोष्ठी संयोजक :

डॉ० जैस्मीन पटनायक

(अध्यक्ष, हिंदी विभाग)

दूरभाष : 9410005868

आयोजन समिति :

1. डॉ. रंजिता जेना (सहायक प्राध्यापिका)
2. डॉ० झुनुबाला खुंटिआ (सहायक प्राध्यापिका)
3. डॉ. ईश्वर कान्ति मुर्मू (सहायक प्राध्यापक)
4. डॉ. रूपांजलि कामिल्या (सहायक प्राध्यापिका)
5. डॉ. बी. एच. शुभश्री (सहायक प्राध्यापिका)
6. श्रीमती सुधांशुबाला साहू (वरिष्ठ प्राध्यापिका)
7. श्रीमती शांता त्रिपाठी (वरिष्ठ प्राध्यापिका)
8. श्री देवार्चन चक्रवर्ती (प्राध्यापक)
9. डॉ. रुद्रचरण माझी (प्राध्यापक)
10. सुश्री पार्वती बारिक (प्राध्यापिका)

समय : पूर्वाह्न 10 बजे

स्थान : सभागार (परिसर-4), किस् मानित विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर

डॉ. रामानुज नारायण
निदेशक,
न.रा.का.स. 02 सी. एस. आई.
आर.- आई. एम. एम. टी., भुवनेश्वर

रणेन्द्र,
पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी,
एवं पूर्व निदेशक
(रामदयाल मुंडा आदिवासी शोध संस्थान,
राँची)

डॉ० अमित कुमार दीक्षित,
राजभाषा अधिकारी,
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रो० सुशील कुमार कोटनाल,
प्रधानाचार्य, पूर्व सदस्य,
उत्तराखंड, भाषा संस्थान

श्री पी.के.दाश
प्रशासन नियंत्रक

विक्रमादित्य सिंह,
अध्यक्ष, प्रबंधक,
विश्व हिंदी परिषद,
ओड़िशा

श्री अकाश श्रीवास्तव,
सदस्य सचिव
न.रा.का.स., भुवनेश्वर,
मुख्य अतिथि

प्रो० वीर बाहादुर
महतो,
प्राध्यापक,
त्रिभुवन
विश्वविद्यालय,

डॉ ० स्नेहलता दास,
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग, रमादेवी
महिला विश्वविद्यालय,
भुवनेश्वर

डॉ. हरिराम मीना,
प्राध्यापक, युवा कवि एवं
आलोचक, अलवर (राजस्थान)

प्रो० अंजुमन आरा,
पूर्व अध्यक्षा,
हिंदी विभाग,
रॉवेंशा विश्वविद्यालय,
कटक

डॉ० अभिषेक शर्मा,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
रॉवेंशा विश्वविद्यालय, कटक

डॉ० श्रीकांत लक्ष्मणराव आरले,
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय

डॉ ० राजीव कुमार श्रीवास्तव,
प्राध्यापक, एस. एस. बी.,
पी. जी. कॉलेज,
जन नायक चंद्रशेखर
विश्वविद्यालय, उ० प्र०